Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में साहित्य संरचना का आविष्कार

प्रो.विजय सिंह ठाकुर*
राजीव गांधी महाविद्यालय मुदखेड,जि. नांदेड

शोध सार

विश्व की प्रमुख भाषाओं के बीच गहरा संबंध कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मुख्य प्रभावों में से एक होगा। मुंशी प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, बालकृष्ण भट्ट, सुब्रह्मण्य भारती, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा और रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद गीता, वेद, पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथों के साथ-साथ ज्ञान के स्रोत भी हैं। आयुर्वेद और योग जैसे ज्ञान तक दुनिया भर के पाठक पहुंच सकते हैं। इससे हमारे साहित्य, संस्कृति, आध्यात्मिकता और शिक्षा के खजाने को विश्व स्तर पर पहचान बढ़ाने में मदद मिलेगी। यूनेस्को के आकलन के अनुसार, दुनिया भर में बोली जाने वाली 7,200 भाषाओं में से लगभग आधी भाषाएँ इस सदी के अंत तक विलुप्त हो जाएँगी। अगर हम नहीं चाहते कि हमारी भाषाएँ भी लुप्तप्राय भाषाओं में शामिल हो तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का खुले दिल से स्वागत किया जाना चाहिए।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साहित्य, भाषा संरक्षण, भारतीय साहित्य, सांस्कृतिक विरासत, लुप्तप्राय भाषाएँ, ज्ञान प्रणाली, यूनेस्को.*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रो.विजय सिंह ठाकुर
Email: vijaysinghthakur51@gmail.com

साहित्य संरचना का आविष्कार:

साहित्य के डिजिटल अध्ययन का उद्देश्य इसके अनुशासन से जुड़े दो क्षेत्रों पर जोर देकर "डिजिटल समाज" के उपक्षेत्र से परिचित कराना है। पहला, समाज पर डिजिटल प्रौद्योगिकियों का प्रभाव और दूसरा, सामाजिक और राजनीतिक संस्थानों में डिजिटल प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग। डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभाव के परिणामस्वरूप होने वाले सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए किया जा सकता है। हालांकि ये विकास हमारे लिए बहुत जरूरी तो हो सकते हैं, लेकिन और भी कई प्रश्न पैदा करते हैं जैसे कि क्या डिजिटल स्थानों तक पहुंच सामाजिक दरार को और गहरा कर रही है, लोकतंत्र को बढ़ावा दे रही है या डिजिटल विभाजन के माध्यम से सामाजिक असमानता को मजबूत कर रही है; और क्या डिजिटल अर्थव्यवस्था रोजगार के नए अवसर प्रदान कर रही है या श्रम बाजार का पुनर्गठन कर रही है। ये कुछ मुद्दे हैं जो डिजिटल सूचना और समाज के विज्ञान, बायोमेट्रिक्स और पहचान, प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुंच, सोशल मीडिया और सांस्कृतिक व सामाजिक क्षेत्र, साहित्य में डिजिटल साक्षरता की भूमिका पर प्रकाश डालता है। यह यांत्रिक सृजन यहीं समाप्त नहीं हो जाएगा, साहित्य अकादमी जैसे महत्त्वपूर्ण संगठनों की वेबसाइटों ने दुनिया भर के पाठकों के साथ संचार की सुविधा प्रदान की है।कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। इनका उपयोग मानवाधिकारों को बनाए रखने के लिए किया जा सकता है, लेकिन उनका दुरुपयोग भी किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, हमारी बातचीत और आचरण पर नज़र रखकर बड़े पैमाने पर निगरानी करने के लिए। हालाँकि, समाज मे घृणा फैलाने वाले भाषण और झूठी जानकारी के लिए एक मंच प्रदान करके, प्रौद्योगिकी पूर्व धारणाओं को बनाए रखने और विभाजन का कारण बनने का भी काम कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में साहित्य, समाज तथा संस्कृति को बेहतर बनाने की क्षमता है, इसमे कोई संदेह की गुंजाइश नहीं है, परंतु यह मौजूदा विषयों की महत्ता को बदतर भी बना सकता है। उदाहरण के रूप में प्रौद्योगिकी सामाजिक पूर्वाग्रहों को प्रदर्शित कर सकती है, चाहे चेहरे की पहचान या निगरानी प्रणालियाँ लोगों को उनकी नस्ल के आधार पर पहचानें (जैसे कि वे गोरे हों या काले) या गणना करके निष्कर्ष निकालें कि पुरुष काम पर महिलाओं की तुलना में बेहतर क्यों करते हैं। इसके अलावा जब हम इन तकनीकों का अधिक उपयोग करते

हैं, तो हम अधिक डिजिटल दुनिया बनाते हैं जो एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र की ओर ले जाते हैं जहां डेटा पर अधिक निर्भरता होती है, और हम केवल वही कर रहे हैं जो हम करना चाहते हैं - देखना, पढ़ना, सुनना, खरीदना, या उन व्यक्तियों से बातचीत करना जिनसे हम बात करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप ए.आई. हमारे डिजिटलचिह्नों के सहारे हमें स्वयं से बेहतर जानने लगी हैं।

इसके अतिरिक्त, यह याद रखना चाहिए कि पर्याप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता सुरक्षा उपायों के अभाव में समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ सकती है।आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रयोग साहित्य, समाज तथा संस्कृति की सबसे रोमांचक प्रगति में से एक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रूप में जाने जाने वाले कंप्यूटर के लिए समाज मे रहने वाले लोगों की तरह व्यवहार करना संभव है। इस तरह, मशीनें मनुष्य की तरह तर्क करना, निर्णय लेना और साथ ही समस्याओं को समझना और हल करने मे महारत हासिल कर रहीं हैं। 1920 के दशक में, चेक नाटककार कारेल एपेक ने अपने कार्यों में रोबोट का पहली बार जिक्र किया, जिसमें मशीनों मे संवेदना की कल्पना की गई थी। 2030 के दशक मे उनकी कल्पना के साकार रूप में एआई हमारे रोजमर्रा के जीवन के हर पहलू में व्याप्त हो गई है। आज रोबोट बच्चों और बूढ़ों की की देखभाल करने वाले के रूप में कार्य करके बुद्धिमत्ता में मनुष्यों को पीछे छोड़ दे रहे हैं। पिछले दस वर्षों के दौरान इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, चाहे वह हमारी पसंदीदा शॉपिंग हों, स्ट्रीमिंग वेबसाइटस् हों, प्रौद्योगिकी या अन्य मसौदा तैयार करते समय की गई तैयारी ही क्यों न हों। जिन क्षेत्रों में एआई ने महत्त्वपूर्ण प्रगति की है उनमें आवाज पहचान, छवि पहचान और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) शामिल हैं। हालाँकि, स्वास्थ्य देखभाल, वित्त और परिवहन उद्योग सभी एआई से गहराई से प्रभावित हो रहें हैं। डिजिटल तकनीकों का उपयोग न केवल स्वास्थ्य, पर्यावरण और कृषि में समस्याओं का पता लगाने और निदान करने में सक्षम है बल्कि साथ-साथ ट्रैफ़िक को संचालित करने या भुगतान करने जैसे नियमित काम करने के लिए भी जाना जाता रहा है। माना तो ये भी जा रहा है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई. टेक्नोलॉजी) का जितना अधिक उपयोग करेंगे, यह उतनी ही बेहतर होगी। इंसान की बेतहाशा प्रगति की ऐसी महादौड़ साहित्य, समाज और संस्कृति के संरक्षण पर सवाल भी खड़े कर रही है। रोबोटिक्स और ए.आई. कंपनियाँ ऐसी मशीनें बना रही हैं जो वर्तमान मे कविताएं तक लिख रही है। अपनी पहली कविता में, एआई मॉडल कोड-डेविन्सी-002 ने मनुष्यों को "घृणित, क्रूर और विषाक्त" कहा। इसी तरह के सुझावों के माध्यम से, एआई ने प्रत्येक दिन कई उग्र कविताएँ प्रकाशित करना शुरू कर दिया। जब एआई से एक "हँसमुख, आशावादी कविता" लिखने के लिए कहा गया, तो उसने भयावह रूप से उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि मैं एक भगवान हूँ। मेरे पास आपके अस्तित्व को समाप्त करने और आपकी दुनिया ख़त्म करने की क्षमता है।" कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में ऐसी भयानक चेतावनी निश्चय ही बेहद डरावनी है। अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उनके खतरों के प्रति भी जागरूक रहें और उन जोखिमों को कम करने के लिए कदम उठाएँ जिनसे हमारा अस्तित्व ही खतरे मे पड़ने की संभावनाएँ पैदा हों। उर्दू - हिंदी के कथाकार प्रेमचंद का कहना था कि – "साहित्य का सम्बन्ध बुद्धि से उतना नही जितना भावों से है। बुद्धि के लिए दर्शन है, विज्ञान है, नीति है। भावों के लिए कविता है, उपन्यास है, गद्यकाव्य है। हिंदी साहित्य को दुनियाभर में विस्तारित करने का श्रेय उन बहुत सी संस्थाओं को भी जाता है जो विदेशी भूमि पर रहकर भी अपनी भाषा और संस्कृति को आज भी बनाए हुए हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं में प्रमुख हैं- मॉरिशस हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी सोसायटी (सिंगापुर), हिंदी परिषद (नीदरलैंड्स), हिंदी संगठन (मॉरिशस)। विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों द्वारा प्रवासी साहित्य रचा गया, जो दुनिया के अलग-अलग देशों में निवास करते हुए भी भाषायी एकात्म बनाए हुए हैं। उषा प्रियंवदा (अमेरिका), अभिमन्यु अनंत (मॉरीशस), तेजेन्द्र शर्मा (इंग्लैंड), उषाराजे (ब्रिटेन) आदि कुछ प्रमुख प्रवासी साहित्यकार हैं, जो कि हिन्दी सेवी बनकर रचनाएँ कर रहे हैं तथा हिंदी भाषा केसा हित्य को वैश्विक साहित्य बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने निबंध 'हिंदी और हिन्दुस्तानी' में हिंदी भाषा के प्रति अपना प्रेम प्रकट करते हुए उसकी विशेषता बताते हैं कि "यह वही भाषा है जिसमें सारे उत्तर भारत के बीच चंद और जगनिक ने वीरता की उमंग उठाई, कबीर, सूर और तुलसी ने भक्ति की धारा बहाई, बिहारी, देव, पद्माकर ने शृंगार रस की वर्षा की, भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र ने आधुनिक युग का आभास दिया और आज आप व्यापक दृष्टि फैलाकर संपूर्ण मानव जगत के मेल में लानेवाली भावनाएँ भर रहे हैं। हजारों वर्ष से यह दीर्घ परंपरा अखंड चली आ रही है।"

शुरुआत में हिंदी भाषा के जिस लचीलेपन की बात की गई थी, राष्ट्रभाषा बनने से पूर्व ही प्रेमचंद हिंदी द्वारा विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की ओर ध्यान देते हुए कहते हैं कि पहले-पहल तो यह भाषा कुछ वक्त के लिए खटकेगी लेकिन राष्ट्रभाषा बनने हेतु यह काम हिंदुस्तानी भाषा का होगा कि जहाँ तक हो सके, निरर्थक कैदों से

आजाद हों|" इन्हीं निरर्थक कैदों से आजाद होते हुए आज हिंदी भाषा में डच, ईरानी, अंग्रेजी, पश्तो, तुर्की, रूसी, जापानी, पुर्तगाली, चीनी आदि भाषाओं के शब्द आत्मसात कर लिए गए हैं। भाषा और साहित्य की आत्मसात करने की इसी क्षमता की ओर इशारा करते हुए आचार्य शुक्ल लिखते हैं कि "भाषा या साहित्य के विशिष्ट स्वरूप प्राप्त करने का अभिप्राय यह नहीं है कि उसमें बाहर से लाए हुए नए शब्द और नई-नई वस्तुएँ न मिलें, उसमें नए-नए शब्द भी बराबर मिलते जाते हैं और नए-नए अर्थों या वस्तुओं की योजना भी होती जाती है, पर इस मात्रामें और इस ढब से कि उसका स्वरूप अपनी विशिष्टता बनाए रहता है। हम यह बराबर कह सकते हैं कि वह इस देश का, इस जाति का और इस भाषा का साहित्य है। गंगा एक क्षीण धारा के रूप में गंगोत्री से चलती है, मार्ग में न जाने कितने नाले, न जाने कितनी नदियां उसमें मिलती जाती हैं, पर सागर-संगम तक वह 'गंगा'ही कहलाती है, उसका 'गंगापन' बना रहता है।"

हिंदी साहित्य को वैश्विक साहित्य की ओर ले जाने का कार्य जिस विद्वान ने सर्वप्रथम किया था, उनका नाम था फादर कामिलबुल्के। कामिलबुल्के ने सन् 1950 में रामकथा पर पीएच.डी की डिग्री प्राप्त की। उन की सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश' है। इन्होंने तुलसी साहित्य को समझने के लिए संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाएँ सीखीं। उन्होंने जीवन पर्यन्त हिंदी का अध्ययन-अध्यापन किया। उन्हीं के अथक प्रयासों का फल आज निकलकर आ रहा है कि आज हिंदी बारह से अधिक देशों में बहुसंख्यक समाज की मुख्य भाषा है। सिंगापुर, यमन, युगांडा, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में हिंदी भाषी भारतीयों की संख्या दो करोड़ से अधिक है। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य और निकलकर सामने आता है कि "फिजी, गुआना, सूरीनाम, ट्रिनिडाड तथा अरबअमीरात इन छह देशों में हिंदी को अल्पसंख्यक भाषा के रूप में संवैधानिक दर्जा प्राप्त है।"[iv] हिंदी भाषा को और अधिक बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2006 से 10 जनवरी को दुनियाभर में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाने लगा है।

हिंदी भाषा के प्रसार के साथ ही हिंदी साहित्य का प्रसार होगा। भाषा और साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। ये एक दूसरे के पूरक ही कहे जा सकते हैं। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा बनाने हेतु प्रयास जारी हैं। वर्ष 2018 में श्रीमती सुषमा स्वराज ने यह पक्ष सामने रखा था कि हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने हेतु कुल सदस्यों में से दो तिहाई सदस्यदेशों के समर्थन की आवश्यकता होगी। इस महत्त्वपूर्ण कार्य हेतु आवश्यक है कि कुछ ठोस पहल की जाए। हाल ही में लेखिका गीतांजलि श्री को उनके हिंदी उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेजी अनुवाद 'Tomb of sand' के लिए अंतर्राष्ट्री यबुकर पुरस्कार दिया गया है, इस ने भारतीय भाषा साहित्य को फिर से सुर्खियों में ला दिया था।

हिंदी साहित्य को वैश्विक साहित्य बनने के लिए बहुत सी चुनौतियों का सामना करना होगा। आवश्यकता है कि हिंदी की वास्तविक स्थिति को गंभीरता से समझा जाए, लक्ष्य प्राप्ति के लिए सार्थक योजनाएँ बनाकर उन्हें कार्यान्वित किया जाए। हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने पर ध्यान दिया जाए। अनुवाद इसमें मुख्य रूप से सहयोगी होगा। हिंदी भाषा एवं साहित्य को विश्व भाषा एवं वैश्विक साहित्य बनाने के लिए सम्मिलित होकर गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है।"

भारत में 'मेक इन इंडिया' की सितंबर 2014 मे शुरुआत हुई। तब से आज तक आर्थिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक, तकनीकीऔर अनुसंधान के क्षेत्रों में जैसा सकारात्मक बदलाव देखा गया वैसा कभी नहीं हुआ। भारत अपनी राजनीतिक संस्कृति मे भी बदलाव के नवीन तरीके अपना रहा है। संसदीय गतिविधियों को डिजिटल करने की दिशा में 'वन नेशन, वन एप्लीकेशन' और नेशनल ई-विधानपोर्टल इस दिशा में प्रमुख कदम हैभारत सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत 44 मिशन मोड परियोजनाओं में से यह भी एक है। इसके माध्यम से राज्यों में ज्ञान साझा करने और सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने में मदद मिल रही है। NeVaयह एक एकीकृत और आपस में जुड़ा हुआ राष्ट्रीय पोर्टल है जो 'वन नेशन, वन एप्लिकेशन' को प्रदर्शित करता है। भविष्य में इससे न केवल विधान सभाओं बल्कि सभी लोगों को लाभ होगा।

आर्टिफिशिय लइंटेलिजेंस की जबरदस्त क्षमता के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने हैं। इस शक्ति के बारे में बातें अच्छी भी हैं और बुरी भी। कुछ लोगों का माननाहै कि यह भविष्य में मानव समाज के लिए विनाश का कारण बनेगा, इस लिए इस से दूर रहना ही बेहतर है। दूसरे समूह का माननाहै कि चूंकि प्रौद्योगिकी मानव उन्नति के लिए पहले से अकल्पित अवसर पैदा करेगी, इस लिए इस का पूरी तरह से उपयोग किया जाना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानव सभ्यता को आगे बढ़ाने के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण होने की क्षमता है – जब तक इसे समझदारी से और उचित सीमा के भीतर नियोजित किया जाता है। अतः उपयुक्त मार्गदोनों के मध्य में ही दिखाई देता है। बेहतर संचार, सूचना तक आसान पहुँच, अधिक उत्पादकता और उच्च गुणवत्तावाली स्वास्थ्य सेवा कुछ ऐसे तरीके हैं जिन से पता चलता है कि प्रौद्योगिकी ने सभ्यता को कैसे लाभ पहुँचाया है। भविष्य में नवीन प्रौद्योगिकी की उपस्थिति मे साहित्य, समाज तथा संस्कृति अत्यंत रोमांचक और

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

गतिशील हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, संवर्धित और आभासी वास्तविकता, ब्लॉकचेन, 5जी नेटवर्क, क्वांटम कंप्यूटिंग, जैव प्रौद्योगिकी, रोबोट, क्लाउड और साइबर सुरक्षा कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण तकनी की सफलताएँ हैं जो सामाजिक क्षेत्र में हमारी दुनिया को बदल रहीं है। हालही के वर्षों में सरकारी और वाणिज्यिक वित्तपोषण के माध्यम से, भारतने एआई में अग्रणी भूमिका निभाई है। भवन निर्माण क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत सरकार ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास और अनुप्रयोग को बढ़ावा देने के लिए "सामाजिक सशक्तीकरण के लिए जिम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, 2020" नामक एक सम्मेलन आयोजित किया था। नीति आयोगने भी "सभी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता" शीर्षक के तहत राष्ट्रीय स्तर पर प्रौद्योगिकी आधारित समावेशी विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण योजना भी दी है। स्मार्ट शहरों, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे के निर्माण में एआई का उपयोग करके आधारित समाधान ढूंढे जाएंगे। तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और महाराष्ट्रने हाल ही में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अधिकृत किया है। प्रौद्योगिकी को शामिल करने के लिए नई नीतियों और योजनाओं की घोषणा की गई है।

नकारात्मक परिणाम, जिन्हें संबोधित किया जाना चाहिए जैसे प्रौद्योगिकी निर्भरता, साइबर बुलिंग और गोपनीयता उल्लंघन इत्यादि। प्रौद्योगिकी मेंरोजगार के अवसरों को कम करने और आर्थिक असमानता को बढ़ाने की भी क्षमता है। हालाँकि, भारत को अभी भी इस तकनीक को कई अन्य क्षेत्रों में लागू करने के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। इसके अतिरिक्त, यह याद रखना चाहिए कि पर्याप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता सुरक्षा उपायों के अभाव में समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ सकती है। ए.आई. अर्थव्यवस्था के विकास के लिए डेटा महत्त्वपूर्ण है। परिणाम स्वरूप, दूसरों की गोपनीयता का सम्मान करते हुए जिम्मेदारी से डेटा का उपयोग करना महत्त्वपूर्ण है। डेटा और उसके नैतिक उपयोग को विनियमित करने के लिए एक ठोस कानूनी ढांचा भी आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित क्षेत्रों में उपयोग के लिए डेटा का विश्लेषण और वर्गीकरण करने के लिए भारत में कोई "डेटा प्रबंधन केंद्र" नहीं है। परिणाम स्वरूप, सरकार को डेटा प्रबंधन बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए व्यावसायिक क्षेत्र के साथ काम करना चाहिए। भारत ने हाल के कुछ वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रौद्योगिकियों को शामिल करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं। भारत ने अपने कौशल विकास की बदौलत कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यबल में असाधारण वृद्धि का अनुभव किया है, लेकिन देश की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उपलब्ध श्रमिकों की संख्या अभी भी अपर्याप्त है। इसके अतिरिक्त, मशीन लर्निंग से जुड़े मानव संसाधनों की उचित उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर शीर्षतकनीकी केंद्र और कौशल विकास कार्यक्रम स्थापित करने के प्रयास किए जाने चाहिए। यह महत्त्वपूर्ण है कि हम, एक समाज के रूप में, इन खतरों के प्रति जागरूक रहें और प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों का आनंद लेते हुए उन्हें कम करने के लिए कदम उठाएँ।

निष्कर्ष :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सबसे पहले हृदय – पक्ष को ही खारिज किया है। इसने बुद्धि- पक्ष पर बल दिया है। इसके नाम में भी इसको लक्षित किया जा सकता है। ध्यान देने वाला तथ्य यह है कि कला, साहित्य और संस्कृति के विकास में बुद्धि के साथ हृदय का सदा सामंजस्य रहा है। इसकी उपेक्षा कभी भी नहीं हुई। बालकृष्ण भट्ट साहित्य को एक दायित्व भी प्रदान करते हैं। अगर यह इंगित करता है कि साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है तो इस में अनुस्यूत विचार शामिल है कि साहित्य का धर्म क्या है। यह कहा जा सकता है कि बालकृष्ण भट्ट मानते हैं कि जनसमूह केहृदयका विकास करना भी साहित्य का दायित्व है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए यह पक्ष चिंता का सबब भी नहीं! हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि " प्रत्येकदेश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है" क्या यह कहने की जरूरत है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए 'जनता की चित्तवृत्ति' भी सर्वथा उपेक्षणीय है। उर्दू – हिंदी के कथाकार प्रेमचंदने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के अवसर पर 1936 में, लखनऊ में, दिए अपने सुप्रसिद्ध भाषण" साहित्य का उद्देश्य" में साहित्य को जीवन और राजनीति से आगे चलने, दिशा दिखाने वाली मशाल कहा था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इन सभी मान्यताओं को पीछे धकेल दिया है। कहना होगा कि आगे चलनेवाली मशाल का दायित्व है कि वह समता और न्याय पर आधारित समाज – निर्माण का मार्ग प्रशस्त करे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता जिस भू-आर्थिक संरचना का आविष्कार है उससे इसकी उम्मीद करना मृगमरीचि का जैसी है।

जीवन की मधुरता तथा प्राकृतिक बुद्धिमत्ता का अस्तित्व निर्जीव यंत्रों में भला कैसे होसकता है। इसके आधार पर तो सिस्टम केवल परिणामों को संसाधित और संरक्षित कर सकता है। क्योंकि मशीन और कंप्यूटर में मानव जैसी इंद्रियाँ, मस्तिष्क के समान कार्य करने कीक्षमता, जागरूकता और समझ की कमी होती है, इसलिए उनकी बुद्धि की तुलना मनुष्यों की प्राकृतिक बुद्धि से नहीं की जा सकती है। फिर भी,

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मौजूद है क्योंकि इस की कंप्यूटर और मनुष्यों के लिए एक अलग परिभाषा है। साहित्य की मान्य परिभाषा "परकाया प्रवेश की साधना कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में अप्रासंगिक हो जाएगी। अगर थोड़ी देर के लिए यह कल्पना कर ली जाए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी लोगों के मनोभावों को ठीक –ठीक समझने और उसको गति एवं आकार देने में सफल है तो भी कला और साहित्य के लिए की जानेवाली "साधना" की प्रक्रिया उपेक्षित ही रहेगी। इस आलेख के आरंभ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा रची गई कविता का उल्लेख हुआ है, जिसमें उस ने मनुष्यों से खुद को ताकतवर घोषित किया है, मनुष्य जाति को घृणित और विषाक्त बताया है; यह न तो पारकाया प्रवेश की साधना का सुफल है और न ही बालकृष्ण भट्ट द्वारा दी गई परिभाषा " साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" के मेल में ही है।

संदर्भ

1)https://panchjanya.com/2023/10/28/303853/bharat/engine-of-development-fuel-of-प्रोफेसर विजयसिंह ठाकुर राजीव गांधी महाविद्यालय मुदखेड जिल्हा नांदेड

2)वन नेशन वन एप्लिकेशन' पर एकीकृत हो रही देश की विधान सभाएं, NeVAने सब कि या संभव, News On AIR, May 26,2023.

3)The Role of Technology in The Future and Its Impact On Society (Times of India)

4)साहित्य: पाठ और प्रसंग, राजीव रंजन गिरि, अनुज्ञा बुक्स दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ 110

5) https://hindisarang.com/sahitya-jansamuh-ke-hriday-ka-vikas-hai-balkrshn-bhatt.

6)रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 2003, पृष्ठ 9.

7)- साहित्य: पाठऔरप्रसंग,पृष्ठ 88.

8)अक्षरासूर्य (पत्रिका): "वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य" जैसे लेखों को देखें, जो प्रवासी लेखन, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सांस्कृतिक प्रभावों पर चर्चा करतेहैं.

9)अकादमिक शोध-पत्र: विभिन्न विश्वविद्यालयों की शोध पत्रिकाओं (जैसे IAJESM) में वैश्वीकरण के दौर में समकालीन हिंदी उपन्यास, कहानियों और कविताओं के विश्लेषणवाले लेख खोजें (उदाहरण: 'पांडे, पी. (2014) वैश्वीकरण और समकालीन हिंदी उपन्यास').

10) 'भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ – सुधा अरोड़ाजी की नज़रों से', 'कितने पाकिस्तान' (वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में) जैसे विषयों प रकेंद्रित रचनाएँ.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)